11 भारत में नगरीकरण (Urbanisation in India)

पारिभाषिक शब्दावली (gLOSSARY OF tERMS)

- ***बस्ती (Colony):*** मानव द्वारा निर्मित आवासों का संगठित स्वरूप बस्ती कहलाता है।
- ***गाँव (Village):*** घरों का एक ऐसा समूह जिसकी एक निश्चित स्थानीय सीमा तथा एक नाम होता है। यह ऐसा लघु समुदाय है जो प्राथमिक, अनौपचारिक संबंधों की प्रधानता एवं समरूपता से युक्त होता है। जनसंख्या की दृष्टि से कम घनत्व वाला होता है और व्यवसाय की दृष्टि से कृषि प्रधान होता है।
- ***कस्बा (Town):*** मानवीय आवास का वह स्वरूप जो अपने जीवनक्रम एवं क्रियाओं में ग्रामीण एवं नगरीय दोनों प्रकार के तत्वों को संजोये रखता है या जब बड़े गांव/केन्द्रीय गांव में नगरीय गतिविधियाँ विकसित होने लगती हैं तो यह कस्बा कहलाता है।
- ***नगर (City):*** एक नगर अत्यधिक वृहद् आकार तथा जनसंख्यात्मक घनत्व वाला एक ऐसा समुदाय है, जिसके निवासी विविध और अकृषिक कार्यों में संलग्न होते हैं, जिनकी विशिष्ट जीवन शैली होती है, जो प्रायः ग्रामीण जीवन शैली से भिन्न होती है।
- ***नगरवाद (Urbanism):*** नगरीय जीवन के साथ व्यक्तियों के समायोजन की प्रक्रिया अर्थात् नगर के लोगों के जीवन का तरीका, नगरीयता/नगरवाद कहलाता है।
- ***नगरीकरण (Urbanisation):*** नगरवाद के लक्षणों के विकास (विचारों एवं व्यवहारों के रूप में) एवं प्रसार की प्रक्रिया नगरीकरण कहलाती है।
- ***शहरी विकास (Urban Growth):*** मानव की आखेट अवस्था से नगरीय अवस्था तक की यात्रा, जहाँ नगर की संख्या में वृद्धि होती है शहरी विकास कहलाता है।
- ***नगरीकरण चक्र (Cycle of Urbanisation):*** नगरीकरण चक्र वह प्रक्रिया है, जिसमें कोई राष्ट्र कृषि सामाजिक व्यवस्था से औद्योगिक सामाजिक व्यवस्था की ओर बढ़ता है। इस संदर्भ में यदि विचार किया जाए तो नगरीकरण की वक्ररेखा अंग्रेजी के S शब्द का अनुकरण करती है।
- ***अतिनगरीकरण (Over Urbanisation):*** विकसित देशों की तुलना में विकासशील देशों में नगरों के विकास की प्रक्रिया भिन्न रही है। जहाँ विकसित देश में नगर की ओर गई जनसंख्या, नगर के साथ समायोजित हो गयी वहीं विकासशील देशों में इसका समायोजन नगर के साथ नहीं हो पाया है। नगर की आर्थिक एवं संरचनात्मक क्षमता से अधिक जनसंख्या का नगर में केन्द्रीकरण हो गया है और इन सब की आवश्यकताओं को पूरा करने में नगर असहाय महसूस कर रहा है।
- ***उपनगर (Suburbs):*** किसी बड़े नगर की परिधि पर बसा हुआ अपेक्षाकृत एक लघु समुदाय जो सामान्यतः अपनी आर्थिक आवश्यकता आदि के लिए मुख्य नगर पर निर्भर रहता है, किन्तु राजनीतिक इकाई की दृष्टि से वह मुख्य नगर से स्वतंत्र होता है।
- ***उप-नगरीकरण (Sub-Urbanisation):*** उपनगरीकरण की यह प्रक्रिया नगरों के परिधीय विस्तार को प्रकट करती है। प्रारम्भ में यह विस्तार जनसंख्या के बाह्य प्रवास एवं आर्थिक क्रियाकलापों के द्वारा घने नगरीय क्षेत्रों से कम घनी, सटी हुई बस्ती के रूप में होता है।
- ***नगरीय फैलाव (Urban Sprawl):*** जब नगर से बाहर कम नगरीय घनत्व वाले क्षेत्रों (जो क्षेत्र कृषि के लिए प्रयोग किये जाते हैं) पर अनियोजित रूप में नगर का विकास हो तो यह शहरी फैलाव कहलाता है।
- ***जीवन निर्वाह नगरीकरण (Substantial Urbanisation):*** भारत में गांव से नगरों की ओर प्रवासित व्यक्ति नगरों के साथ पूर्णता से समायोजित नहीं हो पाये हैं और उन्हें झुग्गी-झोपड़ी या मलिन बस्तियों में जीवन बिताना पड़ रहा है। यद्यपि वे नगरों में ही रहते हैं तथापि वे इस अर्थ में वहां से अनुपस्थित होते हैं कि इनके पास न तो नगरीय जीवन में किसी तरह का कोई योगदान देने की और न ही नगरीय सुख सुविधाएँ भोगने की क्षमता एवं साधन होते हैं। यह स्थिति निर्वाह शहरीकरण कहलाती है।
- ***प्रति-नगरीकरण (Counter Urbanism):*** नगरीय क्षेत्र से दूर जनसंख्या एवं आर्थिक कार्यकलापों का संक्रमण प्रति-नगरीकरण कहलाता है। प्रति नगरीकरण हेतु, धकेलने वाले कारक एवं खींचने वाले कारक दोनों जिम्मेवार हैं। नगरों की आंतरिक भाग की भीड़-भाड़, आवास की कमी, जहाँ धकेलने वाले कारक का कार्य करते हैं, वहीं ग्रामीण क्षेत्र व नगरों के बाहरी भागों का शांति प्रिय वातावरण एवं सस्ती आवास सुविधा खींचने वाले कारक का कार्य करते

हैं। प्रति-नगरीकरण को अतिनगरीकरण की समस्या के निदान के रूप में भी प्रोत्साहित किया जा रहा है।

- ***विरोधी-नगरीकरण (Anti-Urbanism):*** नगरीकरण के प्रति नकारात्मक मनोभाव का प्रदर्शन तथा गाँव के प्रति मोहक लगाव को Anti-Urbanism कहा जाता है।
- ***Metro Polis/Metro Politan City:*** एक विशाल मुख्य नगर, जो सामान्यतया आस-पास की नगरीय बस्ती एवं कस्बों से घिरा हो, ये बस्तियाँ एवं कस्बे आर्थिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से Metro Polis पर निर्भर हो तथा Metro Politan area का केन्द्रीय नगर हो और इसकी जनसंख्या 10 लाख या अधिक हो Metro Polis कहलाती है।
- ***मेगालो पोलिस (Megalo Polis):*** इसे ममफोर्ड नगरों की सभ्यता एवं संस्कृति के पतन का आरम्भ मानते हैं यहाँ पूंजीवाद अपने चरम पर होता है। उत्पादन के क्षेत्र में विशाल मशीनों का प्रयोग, सर्वहारा का शोषण, प्रतिस्पर्धा एवं संघर्ष, सामूहिकता की भावना का ह्रास और व्यक्तिवादी दृष्टिकोण का विकास इस अवस्था के प्रमुख लक्षण हैं।
- ***ग्राम्य-नगरीकरण (Rurbanisation):*** ग्रामीण एवं नगरीय समुदाय की पारस्परिक अंत:क्रिया द्वारा ग्रामीण एवं नगरीय जीवन शैली के घुलने-मिलने तथा मिश्रित ग्रामीण-नगरीय क्षेत्रों के विकास की प्रक्रिया को ग्राम्य- नगरीकरण कहा जाता है।
- ***ग्रामीण शहरी सातत्य (Rural Urban Continuum):*** इसमें ग्राम्य और नगरीय अंतर को दो ध्रुवों के बीच सम्मिलित को देखा जा सकता है जहाँ प्रत्येक ध्रुव की विशेषताएँ दूसरे ध्रुव में घुली मिली होती है।
- ***नगरीय पुंज (Urban Agglomaration):*** 1961 की जनगणना में समीप स्थित दो या दो से अधिक विधिक नगरों के समूह को टाउन समूह कहा गया है, जिसे 1971 Agglomeration कहा गया।
- ***गन्दी बस्ती (Slums):*** नगर का वह स्थान जहाँ आवश्यक सुविधाओं (स्वास्थ्य, वातावरण पानी, बिजली आदि) का अभाव होता है तथा जहाँ अनेक प्रकार की सामाजिक मनोवैज्ञानिक, शारीरिक समस्याओं का उद्भव होता है वह Slums कहलाता है। गंदे एवं जर्जर मकान, क्षमता से अधिक लोगों का जमावड़ा, वेश्यावृत्ति, जुआ, शराब आदि यहाँ के प्रमुख लक्षण हैं।
- ***नगरीय नियोजन (Urban Planning):*** नियोजित तरीके से नगरों का निर्माण/नगर निर्माण हेतु नियोजन नगर नियोजन कहलाता है। भौतिक नियोजन में Washington DC विश्व में सर्वप्रथम नियोजित नगर का प्रतिनिधित्व करता है और मध्यकाल में इसी सन्दर्भ में चार दीवारी के भीतर नगर fort raise town का विकास हुआ।

भारत में नगर की परिभाषा (Definition of City in India)

वर्ष 1961 में अन्य प्रशासनिक और जनसांख्यिकीय विशेषताओं (Demographic Characteristics) के साथ-साथ आर्थिक विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए शहरी क्षेत्र को परिभाषित किया गया। 2011 में भी यह परिभाषा अपवर्तित रही। इस परिभाषा के अनुसार निम्नलिखित शहरी क्षेत्र हैं:-

1. वह स्थान जो या तो नगर निगम हो अथवा निगम क्षेत्र हो, या नगर पालिका, अथवा अधिसूचित नगर क्षेत्र या छावनी बोर्ड के अधीन हो।
2. वह कोई भी स्थान जो निम्नलिखित मानदंडों को पूरा करता हो।
   - कम से कम 5000 व्यक्ति
   - कम से कम 75% कार्य व्यवसाय कृषि-भिन्न हो।
   - जनसंख्या का घनत्व 400 व्यक्ति प्रति किमी. से कम न हो।
   - ऐसे किसी भी स्थान पर कुछ शहरी विशेषताएँ और सुविधाएँ होनी चाहिए। जैसे नए स्थापित क्षेत्र, बड़ी आवास बस्तियाँ, पर्यटन महत्व के स्थान और नागरिक सुविधाएँ।

स्पष्ट प्रकार से परिभाषित नगरों/शहरों के अतिरिक्त, इनके साथ तेजी से बढ़ते हुए बाहरी हिस्से भी नगरी इलाके कहलाते हैं। 1961 के जनगणना में 'नगरीय समूहों' (Urban Groups) की अवधारणा अपनायी गयी, जिससे नगरों के फैलाव का अंदाजा लगाया जा सके। 1971 में नगरी इलाकों की अवधारणा को अपनाया गया, जिससे शहरीकरण (Urbanization) से संबंधित प्रक्रियाओं को ठीक से समझा जा सके। 2011 की जनगणना तक यही विचार चलता आ रहा है। नगरीय इलाके से तात्पर्य है नगर का बाहरी फैलाव, जिसमें नगर तथा उसके बाहरी हिस्सों को शामिल किया जाता है, अथवा दो या दो से अधिक नगर, पड़ोसी नगर तथा उनसे जुड़े बाहरी हिस्से।

भारत में नगरों का वर्गीकरण (Classification of Cities in India)

1. 5 हजार से कम जनसंख्या-ग्रामीण बस्ती
2. 1 लाख से कम तथा 5 हजार से अधिक-कस्बा (Town)
3. 1 लाख या अधिक जनसंख्या-नगर (City)
4. 10 लाख से अधिक जनसंख्या-महानगर (Metropolitan)

नगरीकरण का स्तर (जनगणना-2011 के अनुसार)

सभी राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली तथा चण्डीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र सर्वाधिक नगरीकृत हैं जिनकी

नगरीय जनसंख्या क्रमशः 75.5% तथा 97.25% है इसके बाद दमन और द्वीव (75.2%) तथा पुदुचेरी (68.3%) हैं।

राज्यों में गोवा 62.2% नगरीय जनसंख्या के साथ सबसे अधिक नगरीकृत राज्य है। उत्तर पूर्वी राज्यों में मिजोरम (51.5%) सर्वाधिक नगरीकृत है। बड़े राज्यों में तमिलनाडु (48.4%) सर्वाधिक नगरीकृत है। इसके बाद केरल (47.1%) तथा महाराष्ट्र (45.2%) का स्थान है। हिमाचल प्रदेश न्यूनतम नगरीकृत है। इसके बाद बिहार (11.3%), असम (14.1%) तथा ओड़ीसा (16.7%) का स्थान है।

नगरों में रहने वाली कुल जनसंख्या के सन्दर्भ में महाराष्ट्र (50.8 मिलियन लोग) का प्रथम स्थान है जो देश की कुल नगरीय जनसंख्या का 13.5% है। इसके बाद उत्तर प्रदेश (44.4 मिलियन) तथा तमिलनाडु (34.9 मिलियन) का स्थान है।

नगरीय जनसंख्या संबंधी महत्वपूर्ण आंकड़ें भारत में नगरीकरण की प्रवृत्ति (1901-2011)

वर्ष	नगरों की संख्या	कुल जनसंख्या (करोड़ में)	नगरीय जनसंख्या (करोड़ में)	कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का %	दशक में नगरीय जनसंख्या में वृद्धि दर % में	नगरीय जनसंख्या में % वार्षिक वृद्धि दर
1901	1,827	23.83	2.59	10.84	–	–
1911	1,815	25.21	2.59	10.29	0.35	0.03
1921	1,49	25.13	2.81	11.18	8.27	0.79
1931	2,072	27.89	3.35	11.99	19.12	1.75
1941	2,250	31.87	4.42	13.86	31.97	2.77
1951	2,843	36.10	6.24	17.29	41.42	3.47
1961	2,365	43.92	7.89	17.97	26.41	2.34
1971	2,590	54.82	10.91	19.91	38.23	3.21
1981	3,378	68.33	15.95	23.34	46.14	3.83
1991	3,768	84.43	21.72	25.72	36.19	3.09
2001	5,161	102.87	28.61	27.81	31.72	3.13
2011	7,935	121.05	37.71	31.16	31.2	3.18

नगरीय समाज एवं नगरीकरण का अर्थ (Meaning of Urban Society and Urbanization)

नगरीय समाज का अर्थ (Meaning of Urban Society)

नगरीय समाज का तात्पर्य विशिष्ट जीवन शैली से जुड़ा है जहाँ मानवीय जीवन की विभिन्न क्रियाओं में ग्रामीण समाज से स्पष्ट अंतर दृष्टिगत होता है। निम्न विशेषताओं से युक्त समाज को नगरीय समाज की संज्ञा दी जाती है:-

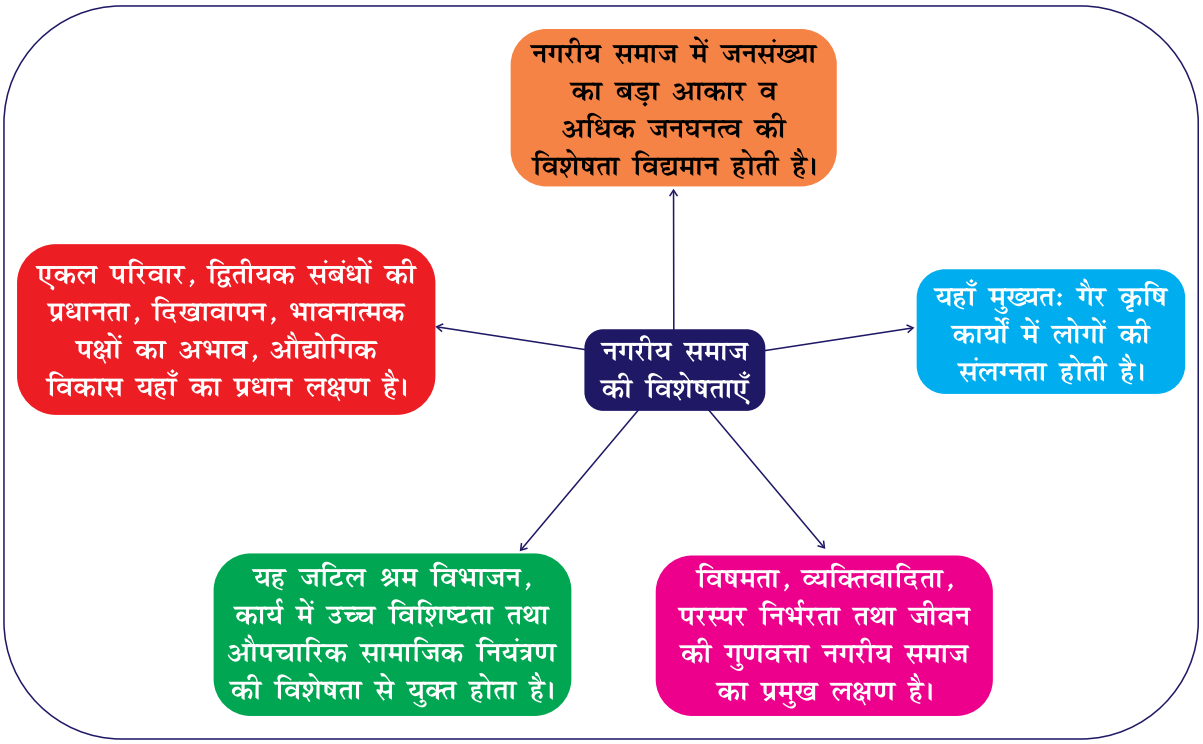

नगरीकरण का अर्थ (Meaning of Urbanization)

नगरीकरण का तात्पर्य नगरीय जनसंख्या, नगरीय क्षेत्रों तथा नगरीय जीवन शैली के प्रसार से है। इस प्रकार नगरीकरण मुख्यत: नगरीय समाज की विशेषताओं के क्षेत्रीय विस्तार से संबद्ध है, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों की ओर प्रवास तथा नगरीय जनसंख्या में वृद्धि दोनों शामिल हैं। नगरीकरण की इस प्रक्रिया में नगरीय व्यवहार, विश्वास, मूल्यों व प्रतिमानों (Values and Pattern) का भी निरंतर विस्तार होता है।

नगरीकरण के जनांकिकीय (Demographic) एवं स्थानिक कारकों में ग्रामीण क्षेत्रों से लोगों के स्थान बदलने, शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या के घनत्व तथा कृषि कार्यों से गैर-कृषि कार्यों के लिए भूमि के उपयोग के स्वरूप में हुए परिवर्तनों को शामिल किया जाता है जबकि आर्थिक कारकों का संबंध कृषि व्यवसाय से गैर-कृषि व्यवसायों में हुए परिवर्तनों के रूप में देखा जाता है। शहर विविध आर्थिक अवसरों के केंद्र रहे हैं अत: वे ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को आकर्षित करते हैं। यह आकर्षण ग्रामीण जनसंख्या के एक बड़े वर्ग को शहरी क्षेत्रों में खींच लेता है। ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त गरीबी, कृषि, अर्थव्यवस्था का पिछड़ापन, कुटीर एवं लघु उद्योगों का समाप्त होना आदि भी ग्रामीणों को शहरी क्षेत्रों में जाने के लिये बाध्य करते हैं। कभी-कभी लोग शहरी जीवन को कुछ अन्य कारणों से भी पसन्द करते हैं जैसे कि शहरों में गुमनामी की जिन्दगी जी जा सकती है। इसके अलावा, यह तथ्य कि नगरीय जीवन में अपरिचितों से सम्पर्क होता रहता है, कुछ भिन्न कारणों से लाभकारी साबित हो सकता है। अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों जैसे सामाजिक रूप से पीड़ित समूहों को शहरी रहन-सहन रोजमर्रा की उस अपमान जनक स्थिति से उन्हें बचाता है जो गांवों में उन्हें भुगतनी पड़ती है, जहाँ हर कोई उनकी जाति से उन्हें पहचानता है। शहरी जीवन की गुमनामी के कारण सामाजिक दृष्टि से प्रभुत्वशाली (Dominant) ग्रामीण समूहों के अपेक्षाकृत गरीब लोग शहर में जाकर कोई भी नीचा समझने वाले काम करने से नहीं हिचकिचाते, जिसे वे गाँव में रहते हुए बदनामी के डर से नहीं कर सकते थे। प्रव्रजन (Migration) के ये कारक नगरीकरण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारत में नगरीकरण (Urbanization in India)

भारत में नगरीकरण एक सतत् ऐतिहासिक प्रक्रिया (Historical Process) का परिणाम रहा है, जिसके बीज सिन्धु घाटी सभ्यता में पाये जाते हैं, जिसके दो शहर हड़प्पा और मोहनजोदड़ो नगरीय विकास के चरमोत्कर्ष को अभिव्यक्त (Expressed) करते हैं। नगरीय विकास की यह प्रक्रिया वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक धीमी गति से निरन्तर चलती रही। ब्रिटिश शासनकाल में कलकत्ता, बम्बई तथा मद्रास जैसे तीन महानगरीय बन्दरगाहों की स्थापना, रेलवे तथा उद्योगों की स्थापना, तमाम हिल स्टेशनों, चाय बागानों, सिविल लाइन्स तथा कैन्टोनमेंट आदि की स्थापना ने भारत में नगरीकरण की प्रक्रिया को एक नयी दिशा दी।

ब्रिटिशकालीन भारतीय शहर पश्चिमीकरण (Westernization) के केंद्र के रूप में विकसित हुए। विद्यालय एवं महाविद्यालय विद्यार्थियों को पश्चिमी विचारधारा एवं भाषाओं में प्रशिक्षित करते थे। एक नए शहरी अभिजात वर्ग का उदय हुआ जिसकी वेशभूषा, खान-पान की आदतें एवं सामाजिक व्यवहार (Social behavior) पाश्चात्य मूल्यों एवं प्रवृत्तियों को ही प्रतिबिंबित करते थे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात्, भारत में बड़े स्तर पर तेजी से नगरीकरण हुआ। इस काल में भारत के नगरीकरण की निम्नलिखित प्रमुख प्रवृत्तियां थीं:-

1. मुख्यत: उत्तरी भारत के नगरीय क्षेत्रों में शरणार्थियों एवं उनकी बस्तियों का निर्माण हुआ।
2. नए प्रशासनिक शहरों की स्थापना हुई जैसे चंडीगढ़, भुवनेश्वर एवं गांधीनगर आदि।
3. प्रमुख शहरों के निकट नए औद्योगिक शहरों एवं नगर-क्षेत्रों का विस्तार हुआ।
4. एक लाख एवं दस लाख जनसंख्या वाले शहरों का तेजी से विकास हुआ।
5. छोटे नगरों की वृद्धि धीमी रही।
6. गंदी बस्तियाँ एवं ग्रामीण-शहरी उपान्तों की संख्या में व्यापक वृद्धि हुई।
7. नगर योजना का सूत्रपात एवं नागरिक सुख-सुविधाओं में सुधार का प्रयास किया जाने लगा।

औद्योगीकरण तथा नगरीय केन्द्रों का विकास (Industrialization and development of Urban Centers)

नगरीय वृद्धि में औद्योगीकरण की एक सकारात्मक भूमिका है। औद्योगिक इकाईयों की स्थापना के साथ ही औद्योगिक श्रमिकों की माँग पैदा होती है, और ग्रामीण कृषि क्षेत्र में लगी हुई श्रम शक्ति, नगरों के उद्योगों को स्थानान्तरित हो जाती है। अत: जितनी अधिक औद्योगिक और उत्पादक ईकाइयों (Production Units) की स्थापना होती है, उतनी ही अधिक ग्रामीण जनसंख्या नगरों की ओर आती है। इसके कारण नगरीय जनसंख्या का आकार बढ़ता है और जनसंख्या घनत्व में वृद्धि होती है।

औद्योगीकरण और नगरीय वृद्धि के साथ-साथ अन्य दूसरे सहायक आर्थिक उद्योगों का भी विकास होता है जो ग्रामीण जनसंख्या को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। तृतीयक क्षेत्र में आर्थिक गतिविधियों के विविध अवसरों जैसे-कॉल सेन्टरों की सेवा, कोरियर, यातायात, संचार, बच्चों और वृद्धों की देखभाल, होम डिलीवरी, आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाएँ, अच्छे शैक्षिक संस्थानों के अलावा नए और आधुनिक मनोरंजन के अवसर जैसे मल्टीप्लेक्स, क्लब और नाइट क्लब आदि नगरों में ही विकसित होते हैं। ये सभी कारक ग्रामीण जनसंख्या को नगरीय केन्द्रों

की ओर खींचते हैं। महाराष्ट्र में मुम्बई, गुजरात में अहमदाबाद, कर्नाटक में बंगलुरु, आंध्र प्रदेश में हैदराबाद, पश्चिम बंगाल में कोलकाता, उत्तर प्रदेश में नोएडा, गाजियाबाद, मुरादाबाद और कानपुर तथा अभी हाल में राजस्थान में जयपुर मुख्य रूप से अपने अंधाधुंध औद्योगीकरण और आर्थिक विकास के कारण भारत के सर्वाधिक विकसित और उच्च रूप से नगरीकृत नगरों में से हैं। हम यह भी देखते हैं कि देश में बहुत से नगर उनमें स्थापित उद्योगों के कारण ही जाने जाते हैं। उदाहरण के लिए भिलाई, आसनसोल, टाटानगर, भदोही आदि।

भारतीय नगरीकरण का प्रतिमान (Pattern) असंतुलित रहा है। प्रथम श्रेणी के नगर विशेषकर बड़े नगर बहुत तेजी से विकसित हुए हैं, जबकि छोटे नगरों में स्थिरता रही है। क्षेत्रीय और स्थानीय नगरों में अप्रवास की दर न्यूनतम से शून्य तक रही है। नगरीय जनसंख्या का साठ प्रतिशत से अधिक भाग प्रथम श्रेणी के नगरों में निवास करता है। देश में नगरीय वृद्धि के असमरूप प्रकृति का कारण मुख्य रूप से भारत सरकार द्वारा अपनाई गयी नगरोन्मुख औद्योगिक नीतियाँ रही हैं। यह अभी हाल की बात है कि नीति निर्माताओं का ध्यान विशाल नगरों से क्षेत्रीय नगरों की ओर गया है और इसके परिणामस्वरूप ग्राम-नगर प्रवसन का रूझान सर्वदेशीय नगरों से क्षेत्रीय नगरों, जैसे राज्यों की राजधानियों और जिला मुख्यालयों की ओर हो गया है। इसका संभावित सुखद परिणाम यह हुआ है कि ग्रामीण जनसंख्या के दिल्ली, मुम्बई और अमृतसर जैसे बड़े नगरों की ओर तीव्र पलायन, जैसा कि अस्सी के दशक तक होता आया था, पर रोक लगी है। इसी के साथ क्षेत्रीय नगर बहुत तेजी से विकसित हो रहे हैं।

भारत में नगरीकरण का सामाजिक प्रभाव (Social Impact of Urbanization in India)

आधुनिकता, वैज्ञानिक और तकनीकी विकास की आड़ में नगरीकरण की संकल्पना ने परम्परागत भारतीय समाज के प्रायः सभी पहलुओं में क्रांतिकारी परिवर्तन किया है। इन परिवर्तनों को निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत देखा जा सकता है।

परिवार व्यवस्था में परिवर्तन (Change in Family System)

नगरीकरण के प्रभावस्वरूप परम्परागत संयुक्त परिवार की संरचनात्मक विशिष्टिताओं में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। विभिन्न अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है कि नगरीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप परम्परागत पारिवारिक मूल्य (Family Values) टूट रहे हैं एवं परिवार का आकार छोटा हो रहा है। नगरीकरण केवल एक प्रक्रिया न होकर एक जीवनशैली है जिसके अपने विशिष्ट मूल्य हैं। यह आधुनिक तार्किक व वैज्ञानिक विश्व दृष्टि के साथ स्वतंत्रता, समानता एवं व्यक्तिवादी मूल्यों (Individualist Values) पर आधारित है जो परम्परागत संयुक्त परिवार के सामूहिक, पितृसत्तात्मक एवं प्रस्थिति (Status) असमानता के मूल्यों के विपरीत है जिसके चलते नगरीकरण ने संयुक्त परिवार के मूल्यों को कमजोर किया है। साथ ही व्यक्तिवाद, आर्थिक उपयोगितावाद (Economic Utilitarianism) एवं नगरीय समस्याओं जैसे आवास, मंहगाई आदि ने बड़े परिवारों को सीमित करते हुए छोटे एवं नाभिकीय परिवारों को प्रोत्साहित किया है।

नगरीकरण के कारण परिवार के ढांचे व आकार में परिवर्तन हो रहे हैं तथा पारिवारिक नातेदारी संबंध कमजोर हुए हैं। चूंकि कुछ अध्ययन स्पष्ट करते हैं कि शहरी समुदायों में आज भी एकल परिवारों की अपेक्षा संयुक्त परिवारों की संख्या ज्यादा है। इसलिये निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि नगरीकरण से संयुक्त परिवार का संरचनात्मक स्वरूप भले ही परिवर्तित हुआ है किन्तु प्रकार्यात्मकता (Functional) बनी हुई है।

जाति व्यवस्था में परिवर्तन (Change in Caste System)

नगरीकरण के प्रभाव से जाति व्यवस्था में परिवर्तन और निरंतरता दोनों ही देखने को मिलती है। नगर में व्यक्ति जाति से ही नहीं बल्कि अन्य उपलब्धियों से अपनी प्रस्थिति प्राप्त करता है। शहर के लोग ऐसे सम्बन्धों में भाग लेते हैं, जिनमें अनेक जातियों के लोग होते हैं। कार्यालय व दफ्तर, होटल व रेस्टोरेन्ट तथा यातायात को साधनों का एक साथ प्रयोग करने की बाध्यता ने जाति संबंधी मूल्यों व प्रतिमानों में अनेक परिवर्तन किये हैं।

लगातार अन्तःक्रिया (Interaction) के कारण विभिन्न जातियों के बीच पवित्रता संबंधी दृष्टिकोण कमजोर हुआ है और जातियों के बीच सामाजिक दूरी में कमी आई है। नगरों में विशिष्टपरक निष्ठाओं की संरचना के स्थान पर सामाजिक और राजनैतिक भागीदारी की अधिक परिष्कृत व्यवस्था मिलती है।

शहरी लोग जाति प्रतिमानों का कठोरता से पालन नहीं करते हैं। नगरीकरण के कारण जातीय प्रस्थिति (Caste Status) के बजाय आर्थिक प्रस्थिति को महत्व मिला है। नगरों में एक ही प्रकार की आर्थिक प्रस्थिति वाले विभिन्न जातियों में लोगों के मध्य अंतःक्रिया को बढ़ाकर उनमें वर्गीय भावना को मजबूत किया है और उनके बीच सामाजिक संबंधों के दायरे को विस्तृत किया है। सहशिक्षा एवं कार्यालयों में साथ रहने एवं काम करने के कारण विभिन्न जातियों के स्त्री व पुरुषों को सामाजिक अन्तःक्रिया (Social Interaction) के अधिक अवसर प्राप्त हुए हैं जिससे प्रेम विवाह एवं अन्तर्जातीय विवाहों के प्रचलन में वृद्धि हुई है। सहभोज सम्बन्धों, विवाह सम्बन्धों, सामाजिक सम्बन्धों, यहाँ तक कि व्यवसायिक सम्बन्धों में भी परिवर्तन आया है। अन्तर्जातीय विवाह की संख्या में हो रही वृद्धि भी नगरीकरण के प्रभाव को स्पष्ट करती है। इस प्रकार शहरों में जातीय एकता की भावना उतनी मजबूत नहीं हैं जितनी की ग्रामों में है।

महिलाओं की प्रस्थिति में परिवर्तन (Change in Status of Women)

नगरीकरण की प्रक्रिया ने महिलाओं की सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक तथा राजनीतिक प्रस्थिति (Political Status) में बड़े ही दूरगामी परिवर्तन किए हैं। आज नगरीय महिलाएँ अपने मौलिक

अधिकारों के प्रति ज्यादा जागरूक हो गयी हैं। उनका स्वरूप कामकाजी हो रहा है। प्रशासन, राजनीति, विज्ञान, संचार, तकनीकी आदि सभी क्षेत्रों में उनकी भागीदारी बढ़ती जा रही है।

शहरी महिलाओं में आत्मनिर्णय की स्वतंत्रता ग्रामीण महिलाओं की अपेक्षा ज्यादा होती है। परिणामतः न केवल उनके विवाह की औसत आयु बढ़ी है वरन् तलाक, पुनर्विवाह आदि मामलों में वे स्वतंत्रता पूर्वक निर्णय ले रही हैं। बैंकिग, कॉल सेन्टर तथा निजी क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है। किन्तु, अभी भी उन्हें यौन उत्पीड़न, भेदभाव जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि नगरीकरण के परिणामस्वरूप महिलाओं की पुरुषों पर निर्भरता कम हुई है तथा वे ज्यादा स्वतंत्रता का अनुभव कर रही हैं।

ग्रामीण समाज में परिवर्तन (Change in Rural Society)

नगर और गाँव कभी भी दो ध्रुवों की तरह अलग-अलग नहीं रहे हैं। इन दोनों के बीच कमोबेश नैरन्तर्य बना रहता है। जहाँ ग्रामीण समुदाय नगरीय संस्कृति से प्रभावित होता रहता है। वहीं नगरीय समुदाय पर भी ग्रामीण संस्कृति के प्रभावों को देखा जा सकता है। नगरीकरण का एक उपयुक्त माध्यम नगरों की ओर ग्रामीण प्रवास है और इस प्रकार गाँवों से नगरों की ओर प्रवसन (Migration) के माध्यम के रूप में नगरीकरण एक सार्वभौमिक घटना है। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार विश्व के नगरों की जनसंख्या में वार्षिक वृद्धि का एक तिहाई से अधिक भाग ग्रामीण-नगरीय स्थानांतरण का परिणाम है। यह स्थानांतरण मुख्य रूप से राजधानी नगरों एवं महानगरों की ओर होता है।

लोग शहरों की ओर पलायन इसलिए करते हैं कि वहाँ अधिक अवसर उपलब्ध होते हैं। प्रवासन ग्रामवासियों के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन (Cultural Life) को प्रभावित करता है। सामाजिक परिवर्तनों के अध्ययन में ग्रामीण क्षेत्रों में नगरीकरण से उत्पन्न तीन प्रकार की दशाओं की पहचान की गयी है:-

1. गाँवों में, जहाँ से लोग बड़ी संख्या में शहरों में रोजगार की तलाश में जाते हैं, शहरी रोजगार एक सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक बन जाता है।
2. नगरों और शहरों में कार्यरत बड़ी संख्या में प्रवासियों वाले किसी औद्योगिक नगर के निकट स्थित गाँवों में आवास, क्रय-विक्रय एवं सामाजिक व्यवस्था संबंधी समस्याएँ पैदा हो जाती हैं।
3. नगर के विस्तार के साथ ही कुछ गाँव नगरीकृत क्षेत्रों में ग्रामीण अंचलों का रूप ले लेते हैं। इस प्रकार, ग्रामवासी नगर के आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक गतिविधियों में सीधे भागीदारी निभाते हैं।

इस प्रकार, प्रवसन नगरीकरण की वृद्धि में निहित एक मुख्य घटक है जो आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों द्वारा नियंत्रित होता है। यह सांस्कृतिक संपर्क शहरी क्षेत्रों में परस्पर क्रिया से जुड़ी प्रक्रियाओं एवं सामाजिक सामंजस्य के विभिन्न तरीकों की शुरुआत करता है। कृषि के व्यापारीकरण के चलते प्रवसन का एक विशेष महत्व हो गया है। इसके बावजूद मूल स्थान पर प्रवासी अपने विभिन्न प्रकारों एवं सोपानों को रखते हैं और उसी के अनुसार ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बीच निरंतरता बढ़ती है। अनेक सांस्कृतिक विशेषताएँ एक दूसरे से सम्बन्धित रहती हैं, साथ ही, नए विचारों, विश्वासों और आदतों का प्रसार भी गांवों की ओर होता है।

नगरीकरण एवं सामाजिक गतिशीलता (Urbanization and Social Mobility)

जाति और सामाजिक गतिशीलता में औद्योगीकरण एवं नगरीकरण की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही है। शहरी क्षेत्र सामाजिक गतिशीलता के लिए अधिक अवसर प्रदान करते हैं लेकिन फिर भी यह आवश्यक नहीं हैं कि सभी जातियाँ अपनी सामाजिक प्रस्थितियों (Social Status) को ऊँचा उठाने में सफल होती हैं। नगरीकरण और गतिशीलता के संदर्भ में एक अन्य दृष्टिकोण यह है कि आज के युग में व्यक्ति की व्यावसायिक प्रतिष्ठा अधिकतर उसकी शिक्षा पर निर्भर है। जितनी ऊँची शिक्षा होगी उतनी ही ऊँची व्यावसायिक प्रतिष्ठा (Social Prestige) प्राप्त करने की सम्भावना होती है। शहरी समुदाय अच्छे शैक्षिक अवसर प्रदान करते हैं इसलिए यहाँ प्रस्थिति गतिशीलता के अधिक अवसर उपलब्ध होते हैं। नगरीकरण से उत्पन्न व्यावसायिक विशिष्टीकरण ने लोगों को अनेक संभावनायें प्रदान की है जिसके कारण व्यक्ति की योग्यता व कुशलता को उसकी जातीय प्रस्थिति से अधिक महत्व दिया जाने लगा है और व्यावसायिक एवं आर्थिक सफलता व्यक्ति की पहचान का मानदण्ड बनने लगा है। आज विभिन्न जातियों के सफल लोगों को एक ही वर्ग के रूप में जाना जाता है। इस प्रकार से व्यवसाय और समृद्धि की संभावनाओं को उत्पन्न करते हुए नगरीकरण ने बन्द स्तरीकरण (Closed Stratification) की जाति व्यवस्था में वर्ग स्तरीकरण के लक्षणों को उत्पन्न करते हुए गतिशीलता के नये अवसर प्रदान किये हैं।

नगरीय पड़ोस का उद्भव (Emergence of Urban Neighborhoods)

पड़ोस को एक प्राथमिक समूह माना गया है जिसके सदस्य एक दूसरे के साथ घनिष्ठता का संबंध रखते हैं। नगरीकरण ने पड़ोसी सम्बन्धों को इस प्रकार प्रभावित किया है कि पड़ोसी एक दूसरे से सामान्यतः अजनबी बने रहते हैं।

आन्तरिक नगरीय क्षेत्रों में रहने वालों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि आय, शिक्षा और व्यवसाय जैसे संदर्भों में उसी पड़ोस में रहने वाले लोग बिल्कुल भिन्न जीवन व्यतीत करते हैं। पड़ोस में रहने वालों को कई समूहों में यथा-अप्रवासी, पेशेवर, छात्र, बुद्धिजीवी, व्यापारी, नौकरी पेशा वाले, कम शिक्षित, उच्च शिक्षित और मध्यम तथा धनी वर्ग के सदस्य के रूप में विभक्त

किया जा सकता है। ये विविध सामाजिक वर्ग (Social Class) यद्यपि अत्यन्त भौतिक निकटता में रहते हैं, फिर भी सामाजिक रूप से वे अलग-अलग संसार में रहते हैं। नगरों में नव-विकसित बड़ी कॉलोनियों या अपार्टमेन्ट में रहने वाले लोगों के घर अलग न भी हो लेकिन सामाजिक दृष्टि से वे स्पष्ट और अलग जीवन व्यतीत करते हैं। वहाँ रहने वाले धनी लोग अपने को स्थानीय समुदाय का हिस्सा नहीं मानते हैं। उच्च वर्ग के सदस्य परस्पर एक दूसरे को जानते हैं लेकिन अन्य केवल उनके बारे में ही जानते हैं। इस प्रकार यहाँ भी लोग सामान्यत: अपने पड़ोसियों से अनजान ही बने रहते हैं।

जनगणना 2011 ग्रामीण-शहरी जनसंख्या के अन्तिम आँकड़े जनसंख्या (करोड़ में)

	2001	2011	अन्तर
भारत	102.9	121.05	18.15
1. ग्रामीण	74.26 (72.19%)	83.34 (68.84%)	9.08
2. शहरी	28.61 (27.81%)	37.71 (31.2%)	9.1

सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या वाले 4 राज्य

राज्य	जनसंख्या (मिलियन में)
• उत्तर प्रदेश	155.31
• बिहार	92.34
• पश्चिम बंगाल	62.18
• महाराष्ट्र	61.55

सर्वाधिक शहरी जनसंख्या वाले 4 राज्य

राज्य	जनसंख्या (मिलियन में)
• महाराष्ट्र	50.81
• उत्तर प्रदेश	44.49
• तमिलनाडु	34.91
• पश्चिम बंगाल	29.09

शीर्ष पाँच शहरी जनसंख्या % वाले राज्य

रैंक	राज्य	नगरीकरण % में
प्रथम	गोवा	62.2
द्वितीय	मिजोरम	52.1
तृतीय	तमिलनाडु	48.4
चतुर्थ	केरल	47.7
पंचम	महाराष्ट्र	45.2

स्रोत: जनगणना-2011 के अंतिम आँकड़ें

शीर्ष चार शहरी जनसंख्या % वाले संघीय क्षेत्र

रैंक	संघीय क्षेत्र	नगरीकरण % में
प्रथम	दिल्ली	97.5
द्वितीय	चंडीगढ़	97.3
तृतीय	लक्षद्वीप	78.1
चतुर्थ	दमन और दीव	75.2

स्रोत: जनगणना-2011 के अंतिम आँकड़ें

नगरीकरण पर संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष की रिपोर्ट

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष द्वारा प्रत्येक वर्ष विश्व की जनसंख्या पर पेश होने वाली 'द स्टेट ऑफ वर्ल्ड पापुलेशन' नामक 30वीं रिपोर्ट का विषय 'शहरीकरण' रखा गया था। इस रिपोर्ट में विश्व के आँकड़ों के अध्ययन को आधार पर बनाया गया है कि शहरी जनसंख्या में लगभग 60% वृद्धि का कारण पहले की शहरी जनसंख्या में प्राकृतिक वृद्धि है। शेष 40% वृद्धि बाहरी लोगों के आने और जनसंख्या के पुनर्वर्गीकरण (Reclassification) के कारण है। रिपोर्ट में बताया गया था कि वर्ष 2008 में विश्व की कुल जनसंख्या में शहरी जनसंख्या पहली बार ग्रामीण जनसंख्या से अधिक हो जाएगी अर्थात् कुल जनसंख्या की आधे से अधिक हो गयी, जो लगभग 3 अरब 30 लाख अनुमानित की गयी थी। वर्ष 2030 तक विश्व में शहरी जनसंख्या 5 अरब से अधिक हो जाएगी जो विश्व की कुल जनसंख्या की 60% होगी। रिपोर्ट में एशिया और अफ्रीका पर विशेष बल दिया गया है। एशिया की शहरी जनसंख्या वर्ष 2000 के 1.4 बिलियन से बढ़कर 2030 में 2.6 बिलियन, अफ्रीका की 30 करोड़ से बढ़कर 74 करोड़ तथा लैटिन अमेरिका और कैरेबियाई देशों की 40 करोड़ से बढ़कर 60 करोड़ हो जाएगी। रिपोर्ट में वर्ष 2000 और वर्ष 2030 के बीच शहरी जनसंख्या दो गुना बढ़ने का अनुमान लगाया गया है। यह रिपोर्ट इस मिथक को तोड़ती है कि प्रवासियों के कारण शहरों की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। रिपोर्ट के अनुसार प्रवासियों को रोकने का प्रयास जन अधिकारों का अतिक्रमण (Encroachment) करना है। यदि नीति निर्धारकों को लगता है कि शहरी वृद्धि की दर बहुत अधिक है तो वे मानवाधिकारों का सम्मान करने वाली नीतियाँ अपना सकते हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि शहरी जनसंख्या की तेज वृद्धि की प्रवृत्ति का मतलब यह नहीं है कि लोगों को शहर आने से जबरदस्ती रोका जाए। आवश्यकता इस बात की है कि शहरी नियोजन में अपेक्षित सुधार किए जाएँ तथा स्थितियों का पहले से आकलन कर तैयारी की जाए। विश्व की शहरी जनसंख्या का आधे से अधिक हिस्सा पाँच लाख से कम जनसंख्या के शहरों में रहता है, इसलिए इन शहरों के विकास की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। इसलिए झुग्गियों में रहने वालों की बेहतरी पर विशेष ध्यान आवश्यक है। रिपोर्ट के अनुसार जलवायु परिवर्तन के दौर में समुद्र तटीय क्षेत्रों के लिए तूफान और जलस्तर ऊपर उठने के खतरे बढ़े हैं। इसके बावजूद भूमंडलीकरण (Globalization) में निर्यात पर बढ़ते बल और दूसरे कारणों से निचले समुद्र तटीय क्षेत्रों की शहरी जनसंख्या बढ़ी है, जो खतरनाक साबित हो सकती है।

रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2030 तक भारत में वर्तमान 31.2% के मुकाबले शहरी जनसंख्या 40.76% हो जाएगी। भारत में शहरीकरण की यह गति विश्व के किसी भी दूसरे देश के मुकाबले बहुत अधिक होगी। वर्ष 2030 तक भारत में

शहरीकरण की गति 2.5% हो जाएगी, जबकि विश्व में औसत शहरीकरण की गति 1.9% है। वर्ष 2020 तक मुम्बई विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला दूसरा सबसे बड़ा शहर बन जाने की संभावना है। हालांकि यह भी दिलचस्प है कि मुम्बई और कोलकाता जैसे महानगरों में बाहर से आने वाले लोगों की अपेक्षा शहर छोड़कर जाने वालों की संख्या अधिक है। देश में 15वीं जनगणनानुसार महाराष्ट्र राज्य में सर्वाधिक शहरी जनसंख्या निवास करती है; अर्थात् 50.1 मिलियन शहरी जनसंख्या, जो समस्त शहरी जनसंख्या का 13.48% है। उसके पश्चात् क्रमशः उत्तर प्रदेश (44.47 मि.), तमिलनाडु (34.95 मि.) एवं प. बंगाल (29.13 मि.), का स्थान है।

मेगा सिटी

संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार–ऐसे नगरीय संकुलन जिनकी जनसंख्या 10 मिलियन (अर्थात् एक करोड़) से अधिक है, 'मेगा सिटी' की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। भारतीय जनगणना-2011 में इस अवधारणा को स्वीकार किया गया है। देश के 53 मिलियन प्लस नगरीय संकुलनों (Urban Cluster) में से तीन नगरीय संकुलन 'मेगा सिटी' की परिभाषा के अन्तर्गत आते हैं। यथा–

1. वृहद मुम्बई (18.41 मिलियन)
2. दिल्ली (16.31 मिलियन)
3. कोलकाता (14.11 मिलयन)

ध्यातव्य है कि 2001 में उक्त तीनों शहरों का अनुक्रम था– मुम्बई, कोलकाता एवं दिल्ली। ज्ञातव्य है कि 2011 से पहले भारत के नगर निगम क्षेत्र में 40 लाख से अधिक जनसंख्या वाले नगरों को 'मेगा सिटी' कहा जाता था।

मेगा सिटी दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर (% में)

शहरी	दशकीय जनसंख्या 1991-2001	वृद्धि दर 2001-11	अन्तर
1. मुम्बई	30.47	12.05	(-)18.42
2. दिल्ली	52.24	26.69	(-)25.55
3. कोलकाता	19.60	06.87	(-)12.73

✪✪✪✪✪